संजीवनी पब्लिक स्कूल, दत्त कार्य

विषय: हिन्दी, कक्षा नवम्, काव्य खण्ड

पुस्तक: क्षितिज पाठ: 1 साखियाँ एवं सबद, कवि: कबीर

साखियों पर आधारित प्रश्नोत्तर:-

1. मानसरोवर - - - - - - - अनंत न जाहिं ॥

प्रश्न: मानसरोवर किसे कहा गया है? उसमें कैसा जल भरा है?

उत्तर: मानसरोवर में श्लेष अलंकार है। इसका कारण है मानसरोवर शब्द के दो अर्थ हैं- (i) तिब्बत स्थित एक पवित्र झील (ii) मन या मानस रूपी सरोवर, इस सरोवर में शुभ्र अर्थात पवित्र भाव भरा हुआ है।

प्रश्न: 'हंस' किसका प्रतीक है? वह क्या चुगता है?

उत्तर: 'हंस' प्रभु-साधना में लीन साधक का प्रतीक है। वैसे तो माना जाता है कि कि हंस मोती चुगता है, पर यह साधक मुक्ति रूपी मोती प्राप्त करता है

प्रश्न: 'हंस' अब अन्यत्र कहीं जाना क्यों नहीं चाहता?

उत्तर: 'हंस' अर्थात साधक मानसरोवर को छोड़ कर इसलिए जाना नहीं चाहते क्योंकि उसे इस भक्ति में ही सच्चा सुख अर्थात मुक्ति का आनंद प्राप्त होता है।

2. प्रेमी ढूँढ़त - - - - - - - अमृत होइ ॥

प्रश्न: कवि क्या ढूढ़ता फिर रहा है और वह उसे क्यों नहीं मिलता?

उत्तर: कवि सच्चे ईश्वर प्रेमी को ढूंढ रहा है। ऐसे ही नहीं मिल जाता जब तक ईश्वर को ढूँढ़ने वाला स्वयं भी सच्चा ईश्वर प्रेमी न हो।

प्रश्न: दो सच्चे ईश्वर प्रेमियों के मिल जाने पर क्या होता है?

उत्तर: दो सच्चे ईश्वर प्रेमियों के मिल जाने पर विष रूपी बुराइयाँ भी अमृत रूपी अच्छाइयों में बदल जाती है।

प्रश्न: 'विष' और 'अमृत' किसके प्रतीक है? यह विष अमृत कैसे बन जाता है?

उत्तर: 'विष' हमारी वासनाओं, दुर्भावनाओं और पापों का प्रतीक है। 'अमृत' भक्ति, मुक्ति और आनंद का प्रतीक है। यह विष अमृत में तब परिवर्तित होता है जब एक सच्चा ईश्वर भक्त दूसरे सच्चे ईश्वर भक्त से मिल जाता है।

3. हस्ती चढ़िए - - - - - - - झख मारि ॥

प्रश्न: कवि ने ज्ञान की तुलना किससे की है? और क्यों?

उत्तर: कवि ने ज्ञान की तुलना हाथी से की है। जैसे हाथी मस्त रहते है, उसी प्रकार ज्ञानी भी मस्त रहकर किसी की भी परवाह नहीं करता।

प्रश्न: किसे स्वान कहा गया है? और क्यों?

उत्तर: कवि ने इस संसार को स्वान अर्थात कुत्ते के समान बताया है क्योंकि

२०४८-१

Scanned with CamScanner

समाज में आलोचक केवल निंदा करते हैं। इसलिए उनकी परवाह नहीं करनी चाहिए।
प्रश्न: 'भूकन दे झख मारि' कहने का भाव स्पष्ट कीजिए।
उत्तर: 'भूकन दे झख मारि' कहने का भाव यह है कि आलोचकों को निंदा करने दे। वे कुत्तों के समान भौंक-भौंककर स्वयं ही चुप हो जाएँगे। उनकी परवाह नहीं करनी चाहिए।

4. पखापखी के कारने - - - - - - - - - सुजान ॥
प्रश्न: पखापखी से कवि क्या आशय है? लोग इसमें क्या भूले हुए हैं?
उत्तर: पखापखी से आशय है- पक्ष-विपक्ष अर्थात समर्थन और विरोध। कुछ लोग किसी धर्म का समर्थन करते हैं तो दूसरे विरोध इसी कारण वे अपने लक्ष्य अर्थात ईश्वर को भूल जाते हैं।
प्रश्न: 'संत सुजान' किसे कहा गया है?
उत्तर: पक्ष-विपक्ष से दूर जो केवल ईश्वर की भक्ति करता है, वही संत सुजान कहलाता है।
प्रश्न: 'पखापखी', 'सोई संत सुजान' में कौन सा अलंकार है?
उत्तर: अनुप्रास अलंकार।

5. हिन्दु मुआ - - - - - - - - - निकट न जाइ ॥
प्रश्न: कवि ने हिन्दु और मुसलमान को मुआ क्यों कहा है?
उत्तर: क्योंकि हिन्दु 'राम' का नाम लेता हुआ मर गया और मुसलमान खुदा का नाम लेते हुए मर गया। ये दोनो केवल नाम के चक्कर में पड़कर वास्तविक ईश्वर को भूल बैठे हैं।
प्रश्न: कबीर के अनुसार 'जीवता' कौन है
उत्तर: कबीर के अनुसार 'जीवता' वही व्यक्ति है, जो धार्मिक कट्टरता की भावना से परे निष्पक्ष भाव से ईश्वर भक्ति करता है।
प्रश्न: इस दोहे का संदेश क्या है?
उत्तर: इस दोहे के माध्यम से कवि लोगो को धार्मिक कट्टरता से बचने का संदेश दे रहे हैं। उनके अनुसार निष्पक्ष भाव से ईश्वर का स्मरण करना चाहिए।

6. काबा फिरि - - - - - - - जीम ॥
प्रश्न: काबा के काशी तथा राम के रहीम बन जाने का कवि पर क्या प्रभाव पड़ा?
उत्तर: काबा के काशी तथा राम के रहीम बन जाने से कवि तनाव मुक्त हो गया। कबीर को धार्मिक कट्टरता मिटाने का सुग प्राप्त हो गया है। कबीर यही चाहते थे।
प्रश्न: कबीर ने इस दोहे में क्या संदेश देने का प्रयास किया है?
उत्तर: धार्मिक कट्टरता त्यागने का तथा हिन्दु-मुस्लिम एकता का संदेश देने का प्रयास किया है।
page-2 प्रश्न: कबीर की साखियाँ किस छन्द में लिखी गई हैं?
उत्तर: दोहा छन्द।

Scanned with CamScanner

7. ऊँचे कुल - - - - - - - - - साधु निंदा सोइ ॥

प्रश्न: इस दोहे का मूल भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर: इस दोहे का मूल भाव है कि केवल ऊँचे कुल में जन्म लेने से व्यक्ति बड़ा नहीं बन जाता। उसके लिए ऊँचे कर्म आवश्यक होते हैं। ठीक वैसे ही जैसे स्वर्ण कलश में सुरा अर्थात शराब भर तो वह प्रशंसा की पात्र नहीं बन जाती।

प्रश्न: 'ऊँचे कुल' से क्या आशय है?

उत्तर: 'ऊँचे कुल' से आशय है बड़ा खानदान।

सबद (पद)

1. मोको कहाँ - - - - - - - स्वाँस में ॥

प्रश्न: मनुष्य ईश्वर को पाने के लिए क्या प्रयास करता है?

उत्तर: मनुष्य ईश्वर को पाने के लिए मन्दिर - मस्जिद और तीर्थ स्थानों पर जाता है। प्रार्थना करता है। नमाज पढ़ता है। अनेक प्रकार की क्रियाएँ करता है। और योग - वैराग्य का सहारा भी लेता है।

प्रश्न: ईश्वर को कहाँ और कैसे पाया जा सकता है?

उत्तर: ईश्वर का निवास तो हर व्यक्ति के अंदर ही होता है। वह हर जीवित प्राणी की साँसों में रहता है। अतः ईश्वर को अपने ही अन्दर सच्चे मन से खोजना चाहिए। वह तो पलभर की तलाश में मिल जाता है।

प्रश्न: कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के मार्ग में किन प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

उत्तर: कबीर ने निम्न प्रचलित विश्वासों का खंडन किया है?

1. ईश्वर का वास मन्दिर - मस्जिद में नहीं होता। ईश्वर तो सर्वव्यापक होता है।
2. कबीर ने तीर्थ-यात्रा को भी व्यर्थ बताया है।
3. माला फेरने जैसे बाह्य आडम्बरों का भी विरोध किया है।

Scanned with CamScanner

संजीवनी पब्लिक स्कूल, दत्त कार्य
विषय: हिन्दी, कक्षा: नवम, काव्य खण्ड
पुस्तक: क्षितिज पाठ: 10 वाख कवयित्री: ललद्यद

वाख पर आधारित प्रश्नोत्तर:-

1. रस्सी कच्चे — — — — — — — चाह है घेरे॥

प्रश्न 1. इस वाख (पद) का आशय स्पष्ट कीजिए।
उत्तर: इस वाख का आशय है कि हमारा जीवन नश्वर है। हम जीवन रूपी नाव को कच्चे धागे अर्थात कमजोर सहारे अर्थात (साँसों) से खींचते हैं। कवयित्री के मन में प्रभु के पास जाने की उत्कट लालसा है।

प्रश्न 2. कवयित्री कच्चे धागे की रस्सी किसे कह रही है? उसका पानी टपकने से कवि का क्या आशय है?
उत्तर: कवयित्री अपने जीने के साधनों को कच्चे धागे की रस्सी कह रही है। उनसे पानी टपकने का आशय है- जीवन गलाने वाला तत्व। पानी रस्सी को गलाता है और कच्चे सकोरे को भी। यह काल भी हो सकता है।

प्रश्न 3. कवि के कौन-कौन से प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं? घर जाने की चाह क्या है?
उत्तर 3 कवयित्री परमात्मा से मिलने का निरन्तर प्रयास कर रही है, पर मिलन नहीं हो पा रहा। उसके सारे प्रयास व्यर्थ हो रहे हैं। कवयित्री के मन में प्रभु के घर जाने की चाह है वह मुक्ति पाना चाहती है।

2. खा-खाकर — — — — — — — — द्वार की।

प्रश्न 1. इस पद का मूल भाव स्पष्ट कीजिए:-
उत्तर: इस पद का मूल भाव यह है कि मनुष्य को सांसारिक भोगों में लिप्त होने से कुछ प्राप्त होने वाला कुछ नहीं है। कुछ न खाने से व्यक्ति अंहकारी बन जाएगा। व्यक्ति को भोग और त्याग के मध्य जीना चाहिए। सम अर्थात इंद्रियों के निग्रह करने से व्यक्ति समभावी बनता है। और इससे चेतन व्यापक बनती है। तथा मन मुक्त हो जाता है।

प्रश्न 2. खा-खाकर कुछ क्यों प्राप्त नहीं होता? न खाने से व्यक्ति अंहकारी कैसे बन जाता है?
उत्तर: खा-खाकर व्यक्ति कुछ नहीं पाता अर्थात सांसारिक भोगों में लिप्त होने से ईश्वर साधना करना कठिन हो जाता है। भोग सारहीन है। भोगों पर नियंत्रण करना, व्यक्ति को अंहकारी बना देता है और व्यक्ति महात्मा होने का भ्रम पाल लेता है।

प्रश्न 3. 'सम' खाने से क्या आशय है?
उत्तर: सम खाने का आशय है- अंतःकरण तथा बाह्य इन्द्रियों पर निग्रह करना। इससे व्यक्ति समभावी बनता है अर्थात उसमें समानता की भावना आती है। तभी उसका मन मुक्त हो जाता है।

Scanned with CamScanner

3. आई सीधी - - - - - - - - क्या उतराई?

प्रश्न।'आई सीधी राह से, गई न सीधी राह' से कवि का क्या आशय है?
उत्तर: कवयित्री बताती है कि वह ईश्वर प्राप्ति के पथ पर आई थी तो सीधी राह से थी, पर जाने अर्थात मुक्ति का रास्ता सीधा न पकड़कर हठयोग वाला मार्ग पकड़ लिया है। वह इस टेढ़े रास्ते पर भटक गई है।
प्रश्न: 'सुषुम-सेतु' किसे कहा गया है?
उत्तर: सुषुम्ना नाड़ी रूपी पुल।
प्रश्न। किसका दिन कैसे बीत गया? कवयित्री के सामने क्या परेशानी थी?
उत्तर। कवयित्री का दिन हठयोग साधने में बीत गया। अब कवयित्री के सामने यह परेशानी थी कि उसके पास ईश्वर को देने के लिए सत्कर्मों की पूंजि नहीं है।

4. थल थल - - - - - - - - - पहचान ॥

प्रश्न: ईश्वर का निवास कहाँ है?
उत्तर: ईश्वर का निवास प्रत्येक स्थान पर है। वह हर जगह विद्यमान है।
प्रश्न: कवयित्री क्या न करने को कहती है और क्यों?
उत्तर: कवयित्री हिन्दू-मुस्लिम के भेदभाव को समाप्त करने को कहती है। ईश्वर किसी भी रूप में हो कल्याणकारी होता है।
प्रश्न: कवयित्री ज्ञानी को क्या जानने के लिए कहती है? उनके अनुसार ईश्वर की पहचान कैसे हो सकती है।
उत्तर: कवयित्री ज्ञानी को प्रेरणा देती है कि स्वयं को जानो। उसे अपने अन्दर की आत्मा को पहचानना चाहिए। इसी से वह ईश्वर का वास्तविक स्वरूप पहचान पाएगा। ईश्वर से पहचान स्वयं से पहचान है।

अभ्यास प्रश्नोत्तर

प्रश्न: 'रस्सी' शब्द का प्रयोग किसके लिए हुआ है? और वह कैसी है?
उत्तर: 'रस्सी' शब्द का प्रयोग मनुष्य की हर आती-जाती साँस के लिए कहा गया है। यह कमजोर और नाशवान है।
प्रश्न: बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए ललद्यद ने क्या उपाय सुझाया?
उत्तर: बंद द्वार की साँकल खोलने के लिए कवयित्री ने यह उपाय बताया है कि व्यक्ति को भोग और त्याग के बीच संतुलन बनाकर रखना चाहिए। न तो भोग में लिप्त होना चाहिए। और न ही तप में शरीर को सुखा देना चाहिए। व्यक्ति को समभाव से रहना चाहिए। जब व्यक्ति समभावी बन जाएगा तब ईश्वर प्राप्ति के मार्ग के सभी बंद द्वार स्वयं ही खुल जाएँगे।

Scanned with CamScanner